मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 10

MTT-042

सिंधी-हिंदी-सिंधो अनुवाद में
स्नातकोत्तर डिप्लोमा
(पी. जी. डी. एस. एच. एस. टी.)
सत्रांत परीक्षा
जून, 2024
एम.टी.टी.-042 : सिंधी-हिंदी के विविध क्षेत्रों में अनुवाद

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके समान दिए गए हैं।*

---

1. निम्नलिखित में से किसी **एक** प्रश्न का उत्तर दीजिए : 20

(क) 'प्रशासनिक क्षेत्र में अनुवाद की आवश्यकता' विषय पर निबंध लिखिए।

अथवा

(ख) कथा साहित्य में अनुवाद का महत्व बताते हुए सिंधी से हिंदी में अनूदित किसी **एक** कहानी की समीक्षा कीजिए।

2. निम्नलिखित सिंधी शब्दों के हिंदी पर्याय लिखिए : 5

(i) वियो

(ii) चांडोकी

(iii) डोंहुं

(iv) नींढ

(v) पचणु

(vi) वणु

(vii) हीर

(viii) पेको

(ix) सलाह

(x) सिंघणु

3. निम्नलिखित हिंदी शब्दों के सिंधी पर्याय लिखिए : 5

(i) अंश

(ii) उमंग

(iii) कोना

(iv) चाँद

(v) तिकोना

(vi) द्वितीय

(vii) निसंग

(viii) बरामदा

(ix) भगोड़ा

(x) रस्म

4. (क) निम्नलिखित कहावतों/मुहावरों में से किन्हीं **पाँच** का हिन्दी अनुवाद करते हुए उनका सिंधी वाक्य में प्रयोग कीजिए : 10

(i) उला वसाइणु

(ii) यछाड़ी किनी करणु

(iii) अगियाड़ी तिनि जी सुरही जिन जी पछाडो सुरटहो

(iv) अंधनि में काणो राजा

(v) होश उड़ना

(vi) घटिजणु

(ख) निम्नलिखित कहावतों/मुहावरों में से किन्हीं **पाँच** का सिंधी अनुवाद करते हुए उनका हिंदी वाक्य में प्रयोग कीजिए : 10

(i) टका सा जबाव देना

(ii) तू-तू मैं-मैं करना

(iii) अंगारों पर लोटना

(iv) आँख बचाना

(v) रोंगटे खड़े होना

(vi) नौ दो ग्यारह होना

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **चार** का हिंदी में अनुवाद कीजिए : 4×10=40

(i) परमानंदु मेवारामु सिंधी नसुर जे ओसरि में पंहिंजो ख़ासि आस्थानु रखे थो. हू आला अख़बारनवीसु, लुग़तनवीसु ऐं मज़मूननवीसु हो. हू पूरा चारि डहाका 'जोति' जो एडीटरु रहियो. 'दिल बहारु' (1904 ई.) मजमूए में डिनल नंढियूं-नंढियूं चश्केदारु ऐं संजीदह आखाणियूं 'जोति' मां ई खंयल आहिनि. संदसि चूंड मज़मूननि जे मजमूए 'गुल फुल' (ब भाङा 1925, 1926 ई.) में इख़्लाक, कुदिरत, विंदुर, ज्ञान, विज्ञान ऐं मनछेद जहिड़नि मौज़ुनि ते नंढा पर पुख़्ता मज़मुन डिना विया आहिनि. संदसि बोली आमफ़हमु, मिसालनि भरी ऐं असरदारु आहे. ही मिसालु डिसो: 'जडहिं

को चङो कमु कबो आहे त अंदर में सरहाई थींदी आहे. अंदरवारो चवंदो आहे त शाबासि! जे को उबतो कमु कबो आहे त झटि अंदरवारो शर्माईंदो आहे त हाइ! ही छा कयो अथेई ? बुड़ो मरीं! लज़ न थी अचेई ? इहो अंदरवारो फाटोलो दुहिलु आहे. कंहिं जी कीन रखे, वड़ टिसींग मां बि कीन टरे.'

(ii) हेमूंअ जी जीवन घड़ित में माता सां गड़ नानी-डाडोअ जे संस्कारनि जो पिण ऊन्हो दर्शनु थिऐ थो। हू बई हेमूंअ खे नंढपिण में ई वीर बालकनि, बहादुरनि, शिवाजीअ जी देश भगती, महाराणा प्रताप जी बहादुरीअ, सम्राट डाहरसेन जी मातृ भगितीअ वग़ैरह जूं गाल्हियूं, कहाणियूं, आखणियूं, बुधाईंदियूं हुयूं, जिन हेमूंअ जे जीवन में सुठिन, ऊन्हनि संस्कारनि खे जनमु डिनो। हिन जे जीवन घड़ित में घर ऐं वड़नि जे संस्कारनि काफ़ी हथी डिनी। बालिपिण जे संस्कारनि, घर जे सेवाभावी माहोल, स्कूल जे इंतज़ाम, मास्तरनि जी प्रेरणा, हेमूंअ जी दिलि में इन्सानियत ऐं हुब अलवतनोअ जी ज्योत खे जनमु डिनो ऐं देश जी गुलामीअ खे टोड़ण लाइ आमादह कयो।

(iii) सज देश में आज़ादीअ जो गूंजियल पड़ाडो सिंध जी पवित्र भूमीअ ते पिण पहुतो। सिंधी बालक, बहादुर सिर सां कफ़न बधी मैदानें जंग में टुपी पिया। माताउनि हिंदोरनि में नंढड़नि बारनि खे देश मथां कुर्बान थियण जी लोलो डिनी। सिंधू संस्कृतोअ जा वारिस मोअन जे दड़े जी पैदाइश सिंधियुनि पिण आज़ादीअ जे हवन में आहूती डिनी ऐं पाण खे स्वाह करे छडियो।

आज़ादीअ जी युद्ध में सिंधियुनि जूं आहूतियूं, जेल यात्राऊं अजु बि तवारीख़ी बाबनि में सोन्हरी अखरनि में दर्ज आहिनि। सिंधु पिण बियनि प्रांतनि वांगुर आज़ादीअ जी हलचल में सरगरम रही काफ़ी पाण पतोड़ियो। हज़ारें सिंधियुनि जेल यात्राऊं कयूं। अग्रेज़नि जे जुल्म जो बखु बणियां ऐं मुर्कंदड़ चहिरे सां सीनो ताणे गोलियूं सठियूं। केतरनि सिंधियुनि शहादत जो जामो पातो, मौत खे गले लगाए पंहिंजी मातृभूमी, जनम भूमी जंहिं जो अनु खाई, पाणी पी, हवा में साहु खणी हू बांका बहादुर बणिया हुआ, उन जो क़र्जु अदा कयो।

(iv) अदब जी डोड़ में मां बेहद सुस्तु रफ़्तार शख़्सु पिए रहियो आहियां पर सालनि खां मुंहिंजे मन में अहिड़ियूं के रिथाऊं रिथिजंदियूं पिए रहियूं आहिनि त आसांजी बोली ऐं साहित्य जा विरहाइजी वियल साहितकार कठहिं कंहिं जाइ ते, हिक छिति हेठां वेही पहिरीं पंहिंजे अन्दर जा हाल ओरियूं ऐं पोइ पंहिंजे अदब जी यक जहदीअ बाबत सोचियूं। असांजे समाजी ऐं अदबी विरहाङ खे रुगो पंजाहु साल थिया आहिनि ऐं तारीख में पंजाहु सालनि जो अरसो का बि माना नथो रखे। तारीख़ साख ते शहिदी डिनी आहे त जलावतनीअ वारनि दौरनि में पिणि, जलावतन थियल अदीबनि आला अदबु तख़लीक़ कयो आहे।

(v) सिंधी शाइरनि मां सभिनी खां वधीक सिक ऐं सदाक़त सां शाह लतीफ़ जो नालो खंयो वञे थो. खेसि शाइरनि जो सरताजु कोठियो वञे थो. संदसि शइरु दुनिया जे आला दर्जे जे शइर सां बरु मेचे थो.

शाह लतीफ़ जो जनमु सन 1689 ई. में सिंधु जे हैदराबाद ज़िले जे हाला हवेली गोठ में थियो. शाह

हबीब जो पुटु ऐं सिंधीअ जे मशहूरु शाइर शाह करीम जो तड़पोटो हो. हू जड़हिं 17-18 वरिहियनि जो मस हो, तड़हिं खेसि इश्क़ जी अहिड़ी त चोट लग़ो जो बिना कंहिं खे ब़धाए पूरा टे साल बयाबाननि ऐं रेगिस्ताननि में भिटिकंदो रहियो. हुन जोगि़युनि ऐं फ़कीरनि जे संग में हिंगलाज, कछ ऐं काठियावाड़ जे मढ़ियुनि ऐं मसीतुनि जी ज़ियारत कई.

6. निम्नलिखित में से किसी **एक** अनुच्छेद का सिंधी में अनुवाद कीजिए : 1×10=10

(i) केवल नाम लेने मात्र से काम पूरा नहीं होता। काम तो करने से ही पूरा होता है। चलते रहने से ही मंजिल मिलती है। इसलिए व्यक्ति को चाहिए कि वह सफलता के लिए काम करता रहे। जिस प्रकार अनाज और पानी का नाम लेने से भूख नहीं मिटती, बिना पैदल चले मंजिल पर पहुँच नहीं सकते।

काम की सफलता के लिए समय के महत्व को समझा जाना चाहिए क्योंकि जो समय बीत जाता

है, वह फिर लौटकर वापस नहीं आता। हर क्षण का अपना मूल्य है। इसलिए हमारे द्वारा हर क्षण का उपयोग किया जाना चाहिए। जो आज काम करना है उसे आज ही करें। उसे कल पर कभी नहीं छोड़ना चाहिए।

व्यापार करते समय ऐसे लोगों से सावधान रहना चाहिए जो दुर्जन होते हैं। इस प्रकार के लोगों से न तो मित्रता रखनी चाहिए और न ही शत्रुता क्योंकि शत्रुता रखने से वे इस प्रकार खतरनाक व्यक्ति सिद्ध होते हैं, जैसे जलता हुआ कोयला हाथ जला देता है तथा मित्रता रखने से अपशय होता है जैसे ठंडा कोयला हाथ काले कर देता है।

अथवा

(ii) लोक गीतों की मूल बोली अथवा भाषा का पता लगाना कठिन ही नहीं असंभव-सा है, क्योंकि लोक गीत उत्पन्न होकर भाषा के प्रवाह में तैरते चलते हैं। लोक गीतों पर उनके आस-पास का ऐसा प्रभाव पड़ जाता है कि उनका मूल रूप कायम नहीं रहता। इससे जहाँ वे गाए जाने लगते

हैं, वहाँ वे बहुत से शब्द, जो पर्यायवाची होते हैं, उनमें बैठ जाते हैं और उनके मूल शब्दों को स्थान च्युत कर देते हैं। इसमें कौन-सा गीत पहले पहल कहाँ बना इसका पता नहीं लगाया जा सकता। केवल इस बात का पता लग सकता है कि कौन-सा गीत कहाँ गाया जाता है।

हमें स्वराज्य तो मिल गया, परंतु सुराज्य हमारे लिए सुखद स्वप्न ही है। इसका प्रमुख कारण यह है कि देश को समृद्ध बनाने के उद्देश्य से कठोर परिश्रम करना हमने अब तक नहीं सीखा। श्रम का महत्व और मूल्य हम जानते ही नहीं। हम अब भी आरामतलब हैं। हम हाथों से यथेष्ट काम करने को हीन लक्षण समझते हैं। हम कम से कम काम द्वारा जीविका उपार्जित करना चाहते हैं। यह दूषित मनोवृत्ति राष्ट्र की आत्मा में जा बैठी है। यदि हम इससे मुक्त नहीं होते तो देश आगे नहीं बढ़ सकता और स्वराज्य सुराज्य में परिणत नहीं हो सकता।